

# बाइबिल यात्राओं के सात चरण – एक खाका

## परिचय

यह दस्तावेज़ इब्रानियों 3:7-4:11 और 1 कुरिन्थियों 10:1-6 के अंशों से प्रेरित है, जिनमें सब के विश्राम की ओर ले जाने वाली विभिन्न यात्राओं का वर्णन है। इब्रानियों में, सृष्टि के बाद परमेश्वर के विश्राम, इस्राएलियों की प्रतिज्ञा की भूमि की यात्रा, यीशु की यात्रा और विश्वासी के परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश करने के प्रयास का उल्लेख मिलता है। यह दस्तावेज़ इन यात्राओं को सात चरणों में विभाजित करता है, और इनके बीच समानताएँ और संबंध दर्शाता है।

- सृष्टि यात्रा सृष्टि के सात दिनों का वर्णन करती है, जिसका समापन परमेश्वर के विश्राम में होता है। इब्रानियों 4:4
- इब्रानियों की यात्रा मिस्र में गुलामी से लेकर वादा किए गए देश तक इस्राएलियों के सफर का वर्णन करती है। इब्रानियों 4:8
- मसीहा की यात्रा यीशु के जन्म से लेकर स्वर्गारोहण तक के जीवन का वर्णन करती है। इब्रानियों 4:10 (□□□□)
- शिष्य/संत की यात्रा अविश्वास से स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने तक विश्वासी के मार्ग को दर्शाती है। इब्रानियों 4:11

प्रत्येक यात्रा को सात चरणों में विभाजित किया गया है, जिसमें एक संख्यात्मक प्रासंगिकता स्तंभ प्रत्येक चरण से जुड़े प्रतीकात्मक संख्याओं को उजागर करता है, जो विभिन्न बाइबिल संदर्भों से लिए गए हैं।

## विभिन्न चरणों का अवलोकन

नीचे चारों यात्राओं के प्रत्येक चरण का संक्षिप्त विवरण दिया गया है:

- चरण 0: यात्रा शुरू होने से पहले की प्रारंभिक अवस्था, जो पाप, अराजकता, बंधन या अविश्वास से चिह्नित होती है।
- चरण 1: प्रकाश, विश्वास, आस्था या उद्भव के साथ यात्रा की शुरुआत।
- चरण 2: पुरानी अवस्था से अलग होना या नई अवस्था की ओर मुड़ना, पश्चाताप करना।
- तीसरा चरण: जन्म या मार्ग, अक्सर पानी के माध्यम से। दफन और नया जीवन।
- चरण 4: मार्गदर्शन या कानून या आत्मा की प्राप्ति।
- चरण 5: परीक्षा या आजमाइश का समय। साथ ही, कृपा/अनुग्रह का समय।
- छठा चरण: एक नई रचना या पारगमन, अक्सर न्याय के साथ। एक और दफन और पुनरुत्थान।
- चरण 7: विश्राम या पूर्णता, पवित्रता, यात्रा का लक्ष्य।

नीचे दी गई तालिका में चारों यात्राओं के प्रत्येक चरण का विवरण दिया गया है, साथ ही □□□□ से संबंधित धर्मग्रंथों के संदर्भ भी दिए गए हैं।

## तालिका: बाइबिल यात्राओं के सात चरण

चरण	सृजन यात्रा	हिब्रू यात्रा	मसीहा यात्रा	शिष्य/संत की यात्रा	संख्यात्मक प्रासंगिकता
चरण 0 प्रारंभिक अवस्था, अराजकता, बंधन, अभाव, अविश्वास	निराकार और अंधकारमय उत्पत्ति 1:2	मिस्र में गुलाम (निर्गमन 1:8-14)	कोई उपस्थिति नहीं यूहन्ना 1:1-2	अविश्वास (इफिसियों 2:1-3; 2 कुरिन्थियों 4:4)	
चरण 1 प्रकाश, विश्वास, उद्भव, आस्था	उसने प्रकाश की रचना की और अंधकार से प्रकाश को अलग किया। (उत्पत्ति 1:3-5; यूहन्ना 1:4-5; प्रेरितों के काम 26:18)	मिस्र से चमत्कारों पर विश्वास किया गया (निर्गमन 4:31; निर्गमन 10:21-23; निर्गमन 12:31-33)	मिस्र से जन्मा (यूहन्ना 8:12; मत्ती 2:2; यूहन्ना 12:46; यशायाह 9:2; मत्ती 4:16; यूहन्ना 1:4-5)	विश्वास (2 कुरिन्थियों 4:6; इफिसियों 5:8; प्रेरितों के काम 26:18)	व्यवस्थाविवरण 6:4
चरण 2: अलगाव, परिवर्तन, निष्पापता, पश्चाताप	जल को अलग करके और विस्तार को आकाश में बदल देता है (उत्पत्ति 1:6-8)	मिस्र से परमेश्वर की ओर मुड़ो, जल को दो भागों में बाँट दो। (निर्गमन 14:21-22; निर्गमन 14:28; गलातियों 4:7-8; रोमियों 6:15-18)	निष्पाप जीवन (मत्ती 2; मत्ती 4:17; इब्रानियों 4:15)	पश्चाताप (प्रेरितों के काम 3:19; भजन संहिता 51:7; प्रेरितों के काम 2:38; प्रेरितों के काम 26:20; गलातियों 4:7-8; रोमियों 6:15-18)	लैव्यव्यवस्था 16:8
चरण 3: जन्म, संक्रमणकालीन अवस्था, बपतिस्मा, स्वयं का अंत	भूमि पर वनस्पति उगती है (उत्पत्ति 1:9-13)	लाल सागर से होकर यात्रा (निर्गमन 14:29; 1 कुरिन्थियों 10:1-2)	यूहन्ना का बपतिस्मा (मरकुस 1:9-11)	प्रथम मृत्यु/बपतिस्मा रोमियों 6:4; यूहन्ना 15:5; कुलुस्सियों 2:12; 1 कुरिन्थियों 10:1-2	होशे 6:2
चरण 4 मार्गदर्शन, कानून, आत्मा, प्रकाश	उन्होंने आकाश में प्रकाश उत्पन्न किए। प्रकाश और अंधकार पर शासन करने के लिए प्रकाश। उत्पत्ति 1:14-19	व्यवस्था का दिया जाना: अग्नि और बादल का स्तंभ (निर्गमन 20; निर्गमन 13:21; 1 कुरिन्थियों 10:3-4)	पवित्र आत्मा प्राप्त होता है (मत्ती 3:16; लूका 3:22; यूहन्ना 16:13)	पवित्र आत्मा (2 कुरिन्थियों 1:21-22; प्रेरितों के काम 2:3, 2:17; 1 कुरिन्थियों 6:19; रोमियों 8:14; यूहन्ना 14:26; योएल 2:28; भजन संहिता 119:105; 2 कुरिन्थियों 3:3; 1 कुरिन्थियों 10:3-4)	यहेजकेल 1:5-14; यहेजकेल 2:2
चरण 5 परीक्षण, वन्य जीवन, परीक्षण	समुद्री जीव/राक्षस और पक्षी बनाए गए (उत्पत्ति 1:20-23)	40 वर्षों के जंगल में परीक्षा, मूसा ने 40 दिनों तक परीक्षा दी (निर्गमन 16-20; व्यवस्थाविवरण 8:2; निर्गमन 32; 1 कुरिन्थियों 10:3-15; भजन 95:8-11)	रेगिस्तान में भटकना/प्रलोभन और उत्पीड़न लूका 4:1-13; मत्ती 24:9; मत्ती 4:1-11; यूहन्ना 16:33	परीक्षा लो, तैयार रहो, धैर्य रखो, हिम्मत मत हारो (2 कुरिन्थियों 13:1-10; 1 पतरस 1:6-7; मलाकी 3:2-3; याकूब 1:2-4; यशायाह 40:31; 1 कुरिन्थियों 10:3-15; यूहन्ना 4:13-14; 1 पतरस 2:24)	मत्ती 25:1-13; मत्ती 14:13-21

चरण	सृजन यात्रा	हिब्रू यात्रा	मसीहा यात्रा	शिष्य/संत की यात्रा	संख्यात्मक प्रासंगिकता
चरण 6: नई सृष्टि, पारगमन, पुनरुत्थान, खतना, न्याय	भूमि से मनुष्य और भूमि पर रहने वाले जीव उत्पन्न होते हैं (उत्पत्ति 1:24-31)	वाचा के संदूक के साथ यरदन नदी पार करना। यरदन में प्रवेश करने से पहले खतना किया गया (यहोशू 6-12; यहोशू 7:1-26; यहोशू 3:14-17; यहोशू 5:2-9)	मृत्यु/पुनरुत्थान रोमियों 3:25; कुलुस्सियों 1:15-20; यूहन्ना 12:31; मत्ती 28:18; मत्ती 25:31-46	दूसरी मृत्यु/पुनरुत्थान में प्रवेश करने से पहले हृदय का खतना होना आवश्यक है (प्रकाशितवाक्य 2:11; 1 कुरिन्थियों 3:12-15; रोमियों 6:12-14; 2 कुरिन्थियों 5:10; रोमियों 8:1; कुलुस्सियों 2:11-13)।	1 शमूएल 17:4; प्रकाशितवाक्य 13:18
चरण 7 विश्राम, प्रतिज्ञा की गई भूमि, राज्य, पूर्णता	पवित्र और विश्राम उत्पत्ति 2:1-3; इब्रानियों 3:7-4:11	प्रतिज्ञा की गई भूमि (यहोशू 21:43-45; इब्रानियों 3:7-4:11; भजन 95:8-11)	स्वर्गिक राज्य, सिंहासन का दाहिना हाथ (यूहन्ना 20:17; प्रेरितों के काम 2:31-35; प्रेरितों के काम 1:9-11; यूहन्ना 14:2-3; मत्ती 11:28; इब्रानियों 3:7-4:11)	स्वर्गीय राज्य लूका 22:25-30; इब्रानियों 3:7-4:11; दान 12:13	लैव्यव्यवस्था 25:8-10 2 इतिहास 36:21 जोशुआ 6:1-20

## संख्याओं के साथ मज़ा

परीक्षा, कष्ट और कृपा/अनुग्रह के समय (अर्थात चरण 5) के दौरान हमें निम्नलिखित बातें पता चलेंगी:

- 40 = (1+7)×5: वफादार रहो और पवित्र रहो!
- 40 = (2+6)×5: पश्चाताप करो या न्याय का सामना करो
- 40 = (3+5)×5: बपतिस्मा लो और तैयार हो जाओ तथा परीक्षाओं/मुश्किलों के लिए तैयार रहो
- 40 = (4+4)×5: पवित्र आत्मा! पवित्र आत्मा!

यह खंड यात्रा के दौरान परीक्षा (चरण 5) में प्रकट होने वाली संख्या 40 के महत्व का मनोरंजक ढंग से विश्लेषण करता है। यह विभिन्न चरणों के बीच संबंध स्थापित करता है और धर्मग्रंथों में संख्याओं के प्रतीकात्मक उपयोग पर चिंतन करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

## निष्कर्ष

इन चारों यात्राओं को एक साथ जोड़कर हम विश्राम और उद्धार के लिए परमेश्वर की योजना की समग्र कथा को देख सकते हैं। सृष्टि से लेकर विश्वासी की यात्रा तक, प्रत्येक चरण परम विश्राम की ओर एक कदम को दर्शाता है। इन यात्राओं के बीच समानताएं बाइबल के इतिहास में परमेश्वर के उद्देश्य की निरंतरता को रेखांकित करती हैं, और हमें उस विश्राम में प्रवेश करने के लिए प्रेरित करती हैं, जैसा कि इब्रानियों 4:11 (□□□□) में प्रोत्साहित किया गया है: □□□□□; इसलिए आओ हम उस विश्राम में प्रवेश करने के लिए तत्पर रहें, ताकि कोई भी अवज्ञा के उसी उदाहरण का अनुसरण करके न गिरे। □□□□□;

## परिशिष्ट:

प्रत्येक चरण में संभावित अध्ययन। आप इब्रानियों 6:1-2 का संदर्भ ले सकते हैं और मूल्यांकन कर सकते हैं कि इन्हें □□□□□; प्राथमिक शिक्षाएँ □□□□□; माना जा सकता है।

चरण 0: ईश्वर की खोज, ईश्वर का वचन, मसीहाई भविष्यवाणी, मार्ग

चरण 1: आस्था, आज्ञाकारिता, अनुग्रह, क्रूस का संदेश, पुराना नियम, नया नियम, योम-किप्पुर

चरण 2: पाप, पाप 2, पश्चाताप

चरण 3: बपतिस्मा

चरण 4: पवित्र आत्मा

चरण 5: सहभागिता, शिष्यत्व, चर्च, धर्मत्याग, धर्मत्याग2

चरण 6: निर्णय।

चरण 7: सात चरण